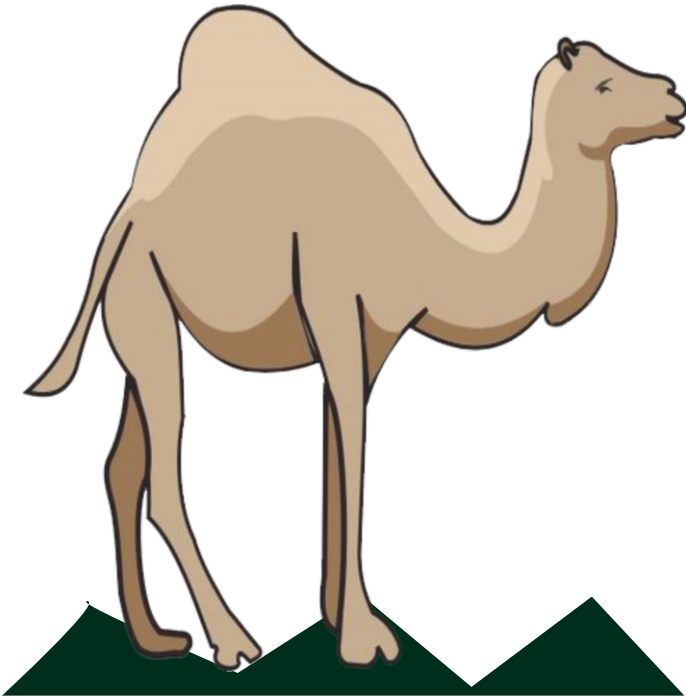


ऊँट पहाड़ के नीचे आता ही कहाँ है ?



एक कहावत है-‘अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे’। मेरी समझ में नहीं आता कि ऊँट पहाड़ के नीचे आता ही कहाँ है ? बल्कि पहाड़ को आना पड़ता है, ऊँट के नीचे। पहाड़ चल नहीं सकता, ऊँट भाग दौड़ कर पहाड़ के दाँत खट्टे कर देता है। पैरों से रौंदता रहता है। पहाड़ ऊँट का कुछ नहीं बिगाड़ पाता। उल्टे ऊँट पहाड़ पर उगी हुई झाड़ियों, पेड़-पौधों को खा-खा कर अपने भारी-भरकम पेट में उदरस्थ कर लेता है। पहाड़ मन मसोस कर रह जाता है, मूक बना देखता रहता है, ऊँट को।

एक कहावत है-‘अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे’। मेरी समझ में नहीं आता कि ऊँट पहाड़ के नीचे आता ही कहाँ है? बल्कि पहाड़ को आना पड़ता है, ऊँट के नीचे। पहाड़ चल नहीं सकता, ऊँट भाग दौड़ कर पहाड़ के दाँत खट्टे कर देता है। पैरों से रौंदता रहता है। पहाड़ ऊँट का कुछ नहीं बिगाड़ पाता। उल्टे ऊँट पहाड़ पर उगी हुई झाड़ियों, पेड़-पौधों को खा-खा कर अपने भारी-भरकम पेट में उदरस्थ कर लेता है। पहाड़ मन मसोस कर रह जाता है, मूक बना देखता रहता है, ऊँट को।

ऊँट तो ऊँट है। लोग बिना मतलब उसके मुँह में जीरा डालते रहते हैं। डालना ही है तो मुँह में नसीराबाद के दो-चार बड़े-बड़े कचौड़े डालो न। उसे भी नमक मिर्ची का स्वाद मिले और हाजमा भी ठीक रहे। कहने सुनने में तो हज़ार बातें हैं, पर कोई उसे समोसा तक नहीं खिलाता।

रेगिस्तान के जहाज की उपाधि से ऊँट को नवाज़ा जाता है। उसने रेगिस्तान में कितने ही समंदर पार किये हैं और ढेर सारे उतार-चढ़ाव देखे हैं। लैला-मजनूँ की दास्तान तो सुनी ही होगी आपने। ऊँट ने लैला को शादी की शाही पालकी में जाते रोते हुए देखा है। मजनूँ को भी तपते रेगिस्तान के गरम-गरम धोरों में लैला की याद में सिसकते पाया है। मगर तपते रेगिस्तान में बेचारे ऊँट को सुस्ताने तक कोई नहीं पूछता। पानी की बात तो बहुत दूर ही है। भले ही कितनी ही पानी की बोटलें लटका कर ऊँट एक से दूसरे स्थान तक सवारियाँ ढोता फिरता हो। वह तो बस पानी की तरावट से ही अपना सफ़र तय करते रहने को मजबूर है।

जो ऊँट पहाड़ों को पैरों तले रौंदता रहता है, जीरा खाने तक को तरस जाता है। लोग अपना हाजमा ठीक करने के लिए रायते में जीरे का बघार लगाते हैं और

चटखारे ले-ले कर मजे से उसका स्वाद लेते हैं। इसलिए ऊँट के मुँह में जीरा डालने के लिए बचा ही कहाँ है ? ऊँट कोई साधारण जानवर थोड़े ही है। वह एक ऐसा हीरो है, जिसके नाम का उच्चारण ‘उष्ट्र-उष्ट्र’ करके कालिदास साधारण इन्सान से महाकवि बन गये। मगर ऊँट जहाँ का तहाँ रहा, जंगलों में भटकने के लिए। भगवान कृष्ण ने गिरिराज पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठा लिया था। सो ऊँट कोई भगवान तो है नहीं, जो कूबड़ पर पहाड़ को उठा सकता हो। फिर उसके किसी करवट बैठने का सवाल ही नहीं उठता। उसकी पीठ पर तो आदमी का रिजर्वेशन है। कभी फुरसत लेने दे तब न। थक-हार कर रेत के टीलों पर तकिया और गद्दे का मज़ा लेता है। भरपूर नींद लेकर सोता है बेचारा। फिर चल देता है, आदमियों के साथ अगली यात्रा पर। कितनी बार छला जाता है ऊँट ? कभी जीरे से, कभी पहाड़ के नीचे तो कभी करवट बदल कर। उसके नसीब में तो सिर्फ़ गरमा भा रहा है, सो गरमा रहता है, पैर पटक-पटक कर। उसकी मथुरा ही तीनों लोकों से न्यारी है। कम से कम जिस हाड़ी में खाता है, उसमें छेद तो नहीं करता। बड़ा पेट होने के बावजूद आदमी की तरह एहसान फरामेश तो नहीं है। जो मिल जाता है, उसी को भगवान की नियामत समझकर सिर झुका कर खा लेता है। ऊँट बहुत ही स्वामीभक्त जानवर है। क्या मज़ाल, जो बिना पूछे कहीं घूमने-फिरने चला जाये ? मगर फिर भी आदमी है कि उसकी नाक में नकैल डालकर रखता है। इससे बड़ा ऊँट तो भ्रष्टाचार है, जो उसकी नाक में आज तक कोई नकैल नहीं डाल पाया है। चाहे करोड़ों रुपये डकार ले। वह तो गाय तक के चारे की तरफ़ आँख उठाकर नहीं देखता। हाँ, घाट-घाट का पानी अवश्य मिल जाता है, पीने को उसे। वह भी आदमी से बच जाये तब। नहीं तो महीनों बिना पानी पिये ही संतोषी

जीव की तरह चलता रहता है। ऊपर से डंडे खाता है, सो अलग। एक बार गीदड़ के साथ क्या चला गया, मक्के के खेत में, खरबूजे खाने कि डंडे मार-मारकर पीठ लाल कर दी किसान ने। ऊँट भी कम नहीं था। गीदड़ को नदी में डुबोकर ही दम लिया, जैसे को तैसा। बिल्ली के गले में घंटी तो सब बांधना चाहते हैं। बिल्ली के गले में घंटी नहीं बांध सकते तो कम से कम ऊँट के गले में ही बांध दो। बैलों की तरह उसके गले में घंटी बांधो तो सही। फिर देखो कितनी मधुर सरगम फूटती है, घंटियों से ?

उसे अमिताभ बच्चन की तरह लम्बे-लम्बे पैर क्या दिये भगवान ने, इतराने लगा अपने आप पर। घमंड तो मोर का भी नहीं चला, जो पैरों को देख-देख कर रोता रहता है। मगर उसकी दरियादिली तो देखो, सूत के रंगीन फुंदनों में गुँथी हुई घंटियों की झंकार को सुन-सुन कर भव्य नृत्य करने लगता है। भाई साहब!! ऊँटनी का दूध पिया है कभी? नहीं न। भला हो इन वैज्ञानिकों का, जो नये-नये आविष्कार करते रहते हैं। ऊँटनियों के दूध से मिठाइयाँ, दही, बर्फी और न जाने कैसे-कैसे मिष्ठान बनाने शुरू कर दिये हैं ? सो ऊँट फूला नहीं समाता, अपने आप पर। भगवान भी कितना निष्ठुर है ? कभी मछली बनकर अवतार लिये हैं उसने, तो कभी सूअर, तो कभी कछुआ बनकर। एक बार ऊँट बनकर भी अवतार लेते तो उन्हें भी पहाड़ के नीचे आने का मज़ा आ जाता। ज़्यादा नहीं तो पहाड़ खोद कर चुहिया तो निकाल ही लेते, जो जाल काट कर उसमें फँसे हुए शेर को आज़ाद करवा देती। कम से कम उपकार चुकाने का अवसर तो देती। धन्य है रे ऊँट !! जो पहाड़ के नीचे आने की कोशिश ही नहीं करता।

 **रघुराज सिंह ‘कर्मयोगी’**

सहायक मंडल यांत्रिक अभियंता, पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा



नायक भेद

लिटरेचर में बताये गये नायक चार तरह के होते हैं, लेकिन फिल्मों के नायक चार सौ बीस तरह के होते हैं। लिटरेचर के नायकों के काम बड़े सीधे होते हैं, लेकिन नाम बड़े मुश्किल। उनके नाम सुनके आदमी भाग खड़ा होता है, जैसे 1. धीरोदात्त, 2. धीरोद्धत, 3. धीरललित और 4. धीरशान्त। फिल्मी नायकों के काम भले ही कैसे भी हों, लेकिन नाम बड़े सीधे और सरल होते हैं, जैसे रोमांटिक नायक, सिंगर नायक, फाइटर नायक, फैमिलियर नायक, हिस्टोरिकल नायक वगैरह-वगैरह।

वैसे तो पूरी दुनिया भेदभावों से भरी पड़ी है, लेकिन हमारे फिल्मी नायकों में भेदभाव कम ही पाये जाते हैं। कभी गौर से देखें, तो एक नायक और दूसरे नायक में जरा-सा फर्क नज़र आता है। उसी फर्क के हिसाब से कुछ छोट-छोटे नायक प्रस्तुत हैं।

◆ रोमांटिक नायक:-

एक रोमांटिक किस्म का नायक होता है। वैसे तो नायक कहने का मतलब ही होता है, रोमांटिक होना। रोमांस करना नायक का जन्म सिद्ध अधिकार होता है और नायक अगर रोमांटिक नायक हो, तो फिर कहने ही क्या? एक तो करेला और ऊपर से नीम चढ़ा। बढ़िया कपड़े पहने, हाथ में एक गिटार लिया और चल पड़े रोमांस करने। न पढ़ाई, न नौकरी, बस, एक ही धंधा, रोमांस। फिल्मों में दूसरे नायक भी रोमांस करते हैं, लेकिन वे रोमांस के साथ-साथ और काम भी करते हैं, जैसे एक बदले की कहानी का नायक रोमांस भी करेगा, लेकिन साथ में अपने बाप का बदला भी लेगा। एक फैमिली फिल्म का नायक शाम के वक्त रोमांस करेगा, लेकिन साथ में ऑफिस भी जायेगा। मगर रोमांटिक नायक को रोमांस के अलावा कुछ भी करने की छूट नहीं है। वह जागेगा, तो रोमांस करेगा। वह सोयेगा, तो रोमांस के सपने देखेगा। एकदम ट्वेन्टी फोर आवर जॉब! नो लुट्टी! नो आराम! उसकी शिक्षा, उसकी जवानी और उसकी पूरी जिन्दगी का एकमात्र उद्देश्य होता है, नायिका को दिल देना और नायिका का दिल लेना। उसके लिए शिक्षित होने का मतलब है, नायिका के लायक बनना। उसके लिए जवान होने का एकमात्र उपयोग है, नायिका के साथ युगल गीत



गाना। उसके जन्म लेने का एक और सिर्फ एक मकसद होता है, प्यार में जीना और प्यार में मरना।

◆ फैमिलियर नायक:-

फैमिलियर नायक उसे कहते हैं, जो जाना-पहचाना सा लगे। हम में से एक लगे। न कि महामानव या सुपर ह्यूमन लगे। हालांकि भारतीय फिल्मों का नायक साधारण-सा लगे, यह बात कुछ जमती नहीं। फैमिलियर नायक बनने के लिए आर्टिस्ट का अच्छा एक्टर होना ज़रूरी है। स्व. मोतीलाल, स्व. बलराज साहनी, स्व. संजीव कुमार और अमोल पालेकर फैमिलियर नायकों में बड़े फिट बैठते थे।

आज अमिताभ बच्चन या धर्मेन्द्र को कोई निर्माता 'छोटी-सी बात' फिल्म में ऑफिस में काम करने वाले क्लर्क की भूमिका में नायक लेकर देखे तो दर्शक सिनेमा हॉल की तरफ मुँह तक नहीं करेगा। उसके लिए अमोल पालेकर जैसा फैमिलियर हीरो ही लेना पड़ेगा, जिसे बॉस डाँट सके। अब अमिताभ को बॉस डाँटेगा, तो दर्शक बर्दाश्त थोड़े ही करेगा। ठीक वैसे ही अमोल पालेकर अगर धर्मेन्द्र या अमिताभ की तरह अमरीश पुरी को घूँसा मारेगा, तो आप क्या समझते हैं, दर्शक ताली बजायेगा? वह ताली नहीं बजायेगा, अपना सिर पीट लेगा। घोड़ा घोड़े की जगह ठीक लगता है। गधा गधे की जगह ठीक लगता है।

◆ गायक नायक:-

जैसा कि नाम से ही प्रकट है, म्यूजिकल फिल्म का नायक ही गायक नायक होता है। आठ-दस हिट गानों से भरपूर कहानी में थोड़ा प्यार का तड़का दे दिया जाता है। एक लड़की गायक नायक से प्यार करती है और गायक नायक संगीत से प्यार करता है। बस, बन गई कहानी। गायक नायक वाली फिल्मों में पहले 'बैजू-बावरा', और 'तानसेन' जैसी फिल्में बनती थीं। भारत भूषण परमानेन्ट गायक नायक बनते थे। संगीत को समझने वाले श्रोता होते थे, तो फिल्में भी खूब चलती थीं। फिर ज़माना बदला। तानपुरा लिए एक ही जगह बैठा गायक नायक कुछ सुस्त सा लगने लगा, तो उसके हाथों में गिटार थमाकर उसे स्टेज पर खड़ा कर दिया गया। वह मॉडर्न गायक नायक हो गया और उसने अपने अस्तित्व को बचा लिया। यह नायक भी काफी चला, फिर इसी नायक ने गाने के साथ-साथ स्टेज पर तुमका भी लगा दिया, तो एक नाचते-गाते नायक का जन्म हुआ। शम्मी कपूर, मिथुन चक्रवर्ती और ऋषि कपूर ने भारत भूषण के वंश को आगे बढ़ाया। कुछ दिन बाद वह नायक भी सुस्त लगने लगा, तो देखते-ही-देखते नाचता-गाता नायक स्टेज छोड़कर सड़क पर उतर आया। अब वह गाता कम है, चीखता ज्यादा है। नाचता कम है, उछलता ज्यादा है, लेकिन टॉप में चल रहा है।

◆ हीमैन नायक:-

हीमैन कहते ही एक ही शख्स का ख्याल आता है, धर्मेन्द्र का। चेहरा उतना ही सुन्दर, जितना कि जिस्म और जिस्म उतना ही सुन्दर, जितना कि मन। सीरियस एक्टिंग के साथ कॉमेडी का बढ़िया मिश्रण। धर्मेन्द्र आते ही निर्माताओं का चेहेता बन गया। हीरोइनें हीमैन के साथ काम करने के लिए अपनी रेट आधी कर दिया करती थीं। हीमैन नायक के आने का सबसे बड़ा फायदा फाइट मास्टर को हुआ। पहले दस में से एक-आध फिल्म में एक फाइट होती थी। अब एक-एक फिल्म में दस-दस फाइट्स होने लगी। फाइट मास्टर, एक्शन डायरेक्टर कहलाने लगा और कारों में चलने लगा। पहली बार खलनायकों को पिटने में मज़ा आया कि एक

हीमैन से पिट रहे हैं, किसी सींकिया पहलवान से नहीं। 'फूल और पत्थर', 'आया सावन झूम के' और 'धर्मवीर' आदि फिल्मों में हीमैन नायक धर्मेन्द्र से बाकायदा अंग प्रदर्शन करवाया गया। जैसे कि नायिकाओं से करवाया जाता है। पता नहीं उस अंग प्रदर्शन का देश की ललनाओं पर असर पड़ा कि नहीं, लेकिन युवा दर्शकों पर खूब प्रभाव पड़ा। वे अखाड़ों और जिमखानों में जाने लगे। केश सज्जा छोड़कर, शरीर सौष्ठव पर ज्यादा ध्यान देने लगे।

♦ फरिश्ता टाइप नायक:-

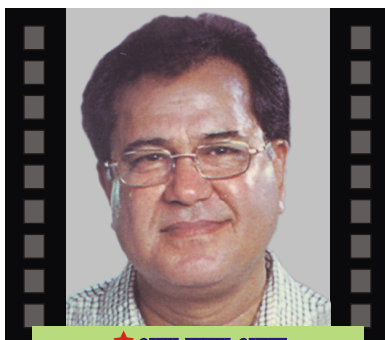
फिल्मों में एक रॉबिनहुड जैसा फरिश्ता टाइप नायक आया, जो हमारे बालकों और बाल बुद्धि वाले दर्शकों को बहुत पसंद आया। कहीं किसी गरीब पर अत्याचार होते हुए दिखा नहीं कि यह फरिश्ता टाइप नायक आँखों पर नकाब पहन के प्रकट हो जाता है। सिनेमा हॉल तालियों से गूँज उठता है। कभी रॉबिनहुड, तो कभी सुपरमैन बनकर, आज भी वह फरिश्ता टाइप नायक अस्तित्व में है। गरीबों का हमदर्द, कमजोरों का दोस्त, यह नायक अमीरों को लूटकर सारा पैसा गरीबों में बाँट देता है। अपने पास एक कौड़ी भी नहीं रखता। हालांकि रख भी ले, तो उससे हिसाब मांगने वाला कौन है ? इसी नायक के कारण गरीब ने आज तक क्रांति नहीं की। उसने गरीब को एक उम्मीद थमा दी। एक इलूजन पकड़ा दिया कि 'मैं हूँ ना !' उससे उसकी कोशिश छीन ली। जब भी गरीब तकलीफ में पड़ता है, तो वह हाथ-पर-हाथ धरे किसी सुपरमैन का, किसी रॉबिनहुड का इंतजार करता है। वह निश्चित होता है, अब तक तो रॉबिनहुड घर से निकल चुका होगा। बस, पहुँचने ही वाला है।

♦ ट्रेजिक नायक:-

सिनेमा के शुरुआती दौर में ट्रेजेडी फिल्मों का बोल-बाला था। के.एल. सहगल और दिलीप कुमार को ट्रेजिक नायक का रोल करने में महारथ हासिल थी। दिलीप कुमार को तो ट्रेजेडी किंग तक कहा जाने लगा। साहित्य वाले धीरोदात्त नायक के सारे गुण ट्रेजिक नायक में होते हैं। धीर, विनम्र और क्षमाशील। उसने अपने दुःख को हमेशा दाढ़ी बढ़ा के प्रकट किया। कभी मुँह से बोल के अपने दुःख को नहीं कहा। अपने प्रेम की दुनिया उजाड़ने वाले को उसने हमेशा माफ किया। कभी बदला नहीं लिया। ऐसा प्रातः स्मरणीय होता है ट्रेजिक नायक। आजकल दर्शकों की उपेक्षा के कारण लुप्त प्रायः सा है। यही हालात रहे, तो एक दिन डायनासौर की तरह हमेशा के लिए लुप्त हो जायेगा।

♦ ऐतिहासिक नायक:-

रोमांटिक और ट्रेजिक नायकों के ज़माने में ही एक और नायक ने दर्शकों को बड़ा प्रभावित किया। वह था, ऐतिहासिक नायक। प्राण जाई पर वचन न जाई वाला नायक। हाथ में तलवार और होठों पर लम्बे-लम्बे डायलॉग। पृथ्वीराज कपूर, सोहराब मोदी, जयराज के रूप में ऐतिहासिक नायक जीवंत हो उठता था। बाद के दिनों में प्रदीप कुमार और रहमान ने जब भी शाही कपड़े पहने, तो उन पर खूब फबे। लम्बे समय तक पर्दे के ऐतिहासिक नायक ने हमारे युवा दर्शकों की भुजाओं को फड़काया। खून को उबाल



★ आश करण अटल

हिन्दी काव्य एवं साहित्य
जगत के जाने-माने हस्ताक्षर श्री
आश करण अटल जी का यह
रोचक स्तम्भ हमने पिछले कुछ
अंकों से शुरू किया है, जिसके
अंतर्गत उन्होंने भारतीय सिनेमा
जगत पर व्यंग्य-विनोद भरी
चुटकियों की शानदार बानगी पेश
की है। आपके पत्रों से पता चला
है कि आपको हमारी यह अनूठी
पहल काफी पसंद आयी है।
इसीलिए इसे जारी रखते हुए इस
बार हम इसकी अगली कड़ी पेश
कर रहे हैं। देश-विदेश के 2000
से अधिक काव्य-पाठी दौरे कर
चुके श्री अटल जी के व्यक्तित्व
का एक और शानदार पहलू इस
स्तम्भ के ज़रिये हम देख पायेंगे।

 प्रधान सम्पादक

दिया, लेकिन वातावरण में कहीं भी वीरता या युद्ध के लक्षण नहीं होने के कारण ऐतिहासिक नायक का दर्शकों से तादात्म्य टूट गया और फलस्वरूप ऐतिहासिक नायक स्वयं इतिहास हो गया। अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा ? वैसे भी वर्तमान समय के नायक से दर्शक का बढ़िया काम चल ही रहा है।

♦ एंग्री यंग मैन नायक:-

एंग्री यंग मैन नायक के आगमन से पहले मजदूर मालिक से नाराज था। किसान ज़मींदार से नाराज था। विद्यार्थी मास्टर के प्रति और आम आदमी सरकार के प्रति गुस्से में भरा बैठा था। एंग्री यंग मैन नायक ने आते ही जैसे सबका बदला ले लिया। उधर अमिताभ बच्चन जैसा पावरफुल एक्टर और ऊपर से एंग्री यंग मैन की इमेज वाला हीरो आया। फिल्म वालों ने लोगों के 'एंगर' को थोक में कैश किया। एंग्री यंग मैन ने घूँसे भी चलाये, तो

खूब चलाये और डायलॉग भी मारे, तो खूब मारे। दुनिया एंग्री यंग मैन से नाराज रहती है, तो एंग्री यंग मैन भगवान समेत पूरी दुनिया से नाराज रहता है। भगवान से वह पावरफुल संवादों से निपटता है और दुनिया से पावरफुल घूँसों से। फैमिलियर नायक अपनी जगह ठीक है, तो एंग्री यंग मैन नायक भी अपनी जगह पर ठीक है। दर्शक एंग्री यंग मैन से एंग्री यंग मैन जैसे व्यवहार की आशा रखता है। अमिताभ बच्चन को किसी फिल्म में बॉस डाँटेगा, तो दर्शक से बर्दाश्त नहीं होगा। वह अमिताभ से अपेक्षा करेगा कि खींच के एक घूँसा मारे बॉस को। घूँसा नहीं, तो कम-से-कम बॉस का कॉलर पकड़कर दो-चार डायलॉग ही मार दे, लेकिन दर्शक यह अपेक्षा अमोल पालेकर से नहीं रख सकता।

♦ प्रतिनायक :-

एन्टी हीरो, यानी प्रतिनायक। प्रतिनायक का आगमन पर्दे पर यूँ तो बहुत पहले हो चुका था। 'चन्द्रलेखा' में रंजन, 'मदर इंडिया' में सुनील दत्त, 'मिस्टर संपत' में मोतीलाल, 'दिल दिया दर्द लिया' में दिलीप कुमार वगैरह-वगैरह, लेकिन हाल के दिनों में प्रतिनायक खूब फला-फूला है। शाहरुख खान की 'बाजीगर' फिल्म के बाद तो प्रतिनायक लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गया। साहित्य में बताये गये चारों नायकों से प्रतिनायक के लक्षण मिलते हैं। धीरोद्धत से, यानी क्रोधी और चपल से। दक्षिण नायक से, यानी सभी प्रेमिकाओं से समान प्रेम करने वाले नायक से। धृष्ट नायक से, यानी साहसी और निर्दयी से और शठ नायक से, यानी धूर्त, छलिया और नकली प्रेम करने वाले नायक से। हिन्दी फिल्मों का नायक इतना नीचे गिर जायेगा, हमें उससे ऐसी उम्मीद नहीं थी। अब क्या है कि दुनिया में हर तरफ वेल्यूज में गिरावट आई है, तो शायद इसीलिए नायक में भी गिरावट आ गई और वह प्रतिनायक बन गया। हमारा भारतीय दर्शक हर गिरी हुई चीज से नफरत करता है, लेकिन हमारा नायक कितना ही गिर जाये, वह उससे नफरत नहीं करता। उल्टे उसकी हँसला अफजाई करता है। यही कारण है कि आज हमारा नायक बिगड़कर दो कौड़ी का हो गया है।

♦ चॉकलेटी नायक:-

चॉकलेटी नायक मतलब गोरा-चिट्ठा, एकदम चिकना नौजवान। एक बार तो देखकर गलतफहमी हो जाये कि यह लड़का है या किसी लड़की ने लड़के का भेष धर लिया है। एक्टिंग के नाम पर उसे आत्मविश्वास के साथ मुस्कुराना आना चाहिये। मुझे आज तक समझ में नहीं आया कि चॉकलेटी नायक को चॉकलेटी नायक कहना, उसकी हँसी उड़ाना है या उसकी तारीफ करना है। चॉकलेटी नायक को आते ही फिल्मों में चांस मिल जाता है और अकसर वह खप भी जाता है, क्योंकि दिखने में सुदर्शन होता है। इसी कारण दर्शक भी उसे स्वीकार कर लेता है। रही बात एक्टिंग की कि उसे आती है या नहीं, इस बात का पता चले तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। वह एक-दो फिल्मों में आ चुका होता है और कई फिल्मों साइन कर चुका होता है। अब वह नायक है और आगे भी रहेगा। फिल्मों में राजनीति वाला टुच्चापन तो है नहीं कि एक बार कुर्सी से हटे नहीं कि भूतपूर्व हो गये।

क्रमशः... अगले अंक में जारी